Total Pages : 3 Roll No. .....

BAJY-201

जातकशास्त्र एवं फलादेश के सिद्धान्त

कला में स्नातक (ज्योतिष) बी.ए. -12/16/17

द्वितीय वर्ष, सत्र, 2019

Time : 3 Hours] **Max. Marks : 80**

नोट : यह प्रश्नपत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पन्द्रह (15) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल तीन (03) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (3×15=45)

1. सामान्य जीवन में जातक शास्त्र का क्या महत्त्व है? प्रकाश डालें।

2. सूर्यादि ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का शुभाशुभत्त्व के विषय में उल्लेख करें।

3. सूर्य, मंगल, गुरू और शनि ग्रहों का केन्द्र और त्रिकोण भावों में पड़ने वाले प्रभाव की विवेचना करें।

4. विशोत्तरी दशा में सूर्य, बुध, शनि ग्रहों के द्वारा होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का उल्लेख करें।

5. ग्रहों की सामान्य एवं विशेष दृष्टि का वर्णन करते हुए भावों के अनुसार फलकथन करें।

खण्ड-ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए सात (07) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल पाँच (05) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (5×7=35)

1. द्वितीय, पंचम, अष्ठम, ग्यारह भावों से विचारणीय विषयों पर प्रकाश डालें।

2. पञ्चम, नवम, दशम भाव के कारक ग्रहों का उल्लेख करें और इन भावों में पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करें।

3. सूर्य, चन्द्र, मंगल ग्रहों के स्वरूप का विश्लेषण करें।

4. प्रथम, तृतीय, पञ्चम भाव में द्विग्रहयोग का विवेचन कीजिए।

5. शनि, राहु, केतु ग्रहों की अन्तर्दशाफल का प्रतिपादन करें।

6. अष्टोत्तरी दशा से आप क्या समझते हैं?

7. षड़्बल कौन-कौन है? उल्लेख करें।

8. सूर्यादि ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री का उल्लेख करें।